

भारत में प्रवासन: पैटर्न, कारण और प्रभाव

अंतिम अद्यतन तिथि: 22 मार्च, 2025 पोस्ट किया गया 22 मार्च, 2025 [नेक्स्ट](#)

आईएस के योगदानकर्ताओं द्वारा

👁 13854



भारत में प्रवासन में रोजगार, शिक्षा, विवाह और जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों के कारण लोगों का विभिन्न क्षेत्रों में आवागमन शामिल है, जिससे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन होते हैं। शहरी भीड़भाड़, संसाधन वितरण और प्रवासी कल्याण जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रवासन के स्वरूप और प्रभावों को समझना आवश्यक है। इस लेख का उद्देश्य भारत में प्रवासन के प्रकार, स्वरूप, कारण और प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करना है।

भारत में प्रवासन के बारे में

- सदियों से प्रवास भारत के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य की एक प्रमुख विशेषता रही है।
- विभिन्न प्रेरक और प्रेरक कारकों से प्रेरित होकर, राज्य की सीमाओं के भीतर और पार लोगों की आवाजाही देश की जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से आकार देती है।
- भारत में प्रवासन एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक घटना है, जो रोजगार के अवसरों, शिक्षा, विवाह और जलवायु संबंधी चुनौतियों जैसे कारकों से प्रेरित है।
- आंतरिक प्रवासन, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर, हावी है, क्योंकि लोग शहरों में बेहतर आजीविका की तलाश करते हैं।
- ग्रामीण गरीबों में मौसमी और मजबूरीवश होने वाला पलायन भी आम है, खासकर कृषि और निर्माण कार्यों के लिए।
- हालांकि प्रवासन आर्थिक विकास और शहरीकरण में योगदान देता है, लेकिन यह शहरों में भीड़भाड़, बुनियादी ढांचे पर दबाव और सामाजिक असमानताओं जैसी चुनौतियां भी पैदा करता है।

भारत में प्रवास के प्रकार

प्रवासन को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:



- **आंतरिक प्रवासन:**

- **ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास :** यह मुख्य रूप से बेहतर रोजगार के अवसरों और जीवन स्थितियों की तलाश से प्रेरित होता है।
- **शहरी से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास :** यह अक्सर सेवानिवृत्त व्यक्तियों या अपने मूल स्थान पर लौटने वाले लोगों में देखा जाता है।
- **ग्रामीण क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास :** यह कृषि श्रमिकों के बीच आम है।
- **शहरी से शहरी प्रवास:** यह नौकरी में स्थानांतरण, बेहतर करियर की संभावनाओं या जीवनशैली संबंधी प्राथमिकताओं से जुड़ा होता है।

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन:**

- **प्रवासन :** रोजगार, शिक्षा या पारिवारिक कारणों से विदेश जाने वाले भारतीय।
- **आप्रवासन :** अन्य देशों के व्यक्ति जो भारत में आकर बसते हैं, अक्सर नेपाल, बांग्लादेश और भूटान जैसे पड़ोसी देशों से।

प्रवासन के पैटर्न

- **मौसमी प्रवास:** यह कृषि श्रमिकों में आम है जो बुवाई या कटाई के मौसम के दौरान पलायन करते हैं।
 - निर्माण श्रमिक और अन्य अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक भी मौसमी प्रवास में संलग्न होते हैं।
- **स्थायी प्रवास:** इसमें आमतौर पर रोजगार, विवाह या शिक्षा के लिए पुनर्वास शामिल होता है।



- **चक्रीय प्रवास:** प्रवासी स्थायी रूप से स्थानांतरित हुए बिना समय-समय पर अपने मूल स्थान और गंतव्य स्थान के बीच आवागमन करते हैं।

प्रवास के कारण

भारत में प्रवासन विभिन्न प्रेरक और प्रेरक कारकों से प्रभावित होता है:

- **आर्थिक कारक:** शहरी केंद्रों में रोजगार के अवसर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन को बढ़ावा देते हैं।
 - औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में अधिक वेतन और बेहतर कार्य परिस्थितियां।
- **सामाजिक कारक:** विवाह महिला प्रवास का एक प्रमुख कारक है।
 - शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक बेहतर पहुंच।
- **पर्यावरणीय कारक:** बाढ़, सूखा और चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण समुदाय विस्थापित हो जाते हैं।
 - जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभाव, जैसे कि समुद्र के स्तर में वृद्धि।
- **राजनीतिक कारक:** सांप्रदायिक हिंसा, राजनीतिक अशांति और सीमा पार संघर्ष।
- **विकास-प्रेरित विस्थापन:** बांध, राजमार्ग और शहरी विस्तार जैसी अवसंरचना परियोजनाएं अक्सर जबरन पलायन का कारण बनती हैं।



प्रवासन के प्रभाव

प्रवासन का व्यक्तियों, समुदायों और पूरे राष्ट्र पर बहुआयामी प्रभाव पड़ता है:

• आर्थिक प्रभाव:

○ सकारात्मक :

- प्रेषण से प्राप्त धन स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है और जीवन स्तर में सुधार लाता है।
- श्रमिकों की गतिशीलता औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देती है।

○ नकारात्मक :

- शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक भीड़भाड़ से बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव पड़ता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कुशल श्रमिकों का पलायन, जिसे "ब्रेन ड्रेन" के नाम से भी जाना जाता है।

• सामाजिक प्रभाव:

○ सकारात्मक :

- विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आने से सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा मिलता है।
- प्रवासी परिवारों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच।

○ नकारात्मक :

- प्रवासियों को सामाजिक अलगाव और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
- पारिवारिक संरचनाओं और पारंपरिक सामाजिक नेटवर्कों में व्यवधान।



- **पर्यावरणीय प्रभाव:**

- प्रवासन के कारण होने वाला शहरीकरण वनों की कटाई और जैव विविधता के नुकसान का कारण बनता है।
- आवास, पानी और ऊर्जा की बढ़ती मांग पर्यावरण के क्षरण में योगदान करती है।

- **जनसांख्यिकीय प्रभाव:**

- प्रवासन से जनसंख्या वितरण में परिवर्तन होता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या में कमी और शहरों में जनसंख्या में वृद्धि होती है।
- उत्पत्ति और गंतव्य दोनों स्थानों पर आयु और लिंग अनुपात जैसे जनसांख्यिकीय संरचनाओं में परिवर्तन।

नीतिगत ढांचा और पहलें

भारत सरकार ने प्रवासन संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए कई उपाय किए हैं:

- **शहरी नीतियां** : बढ़ती शहरी आबादी को समायोजित करने के लिए स्मार्ट शहरों का विकास।
 - इन नीतियों के परिणामस्वरूप किफायती आवास योजनाओं को लागू किया गया।
- **ग्रामीण विकास** : संकटग्रस्त पलायन को कम करने के लिए एमजीएनआरईजीए जैसी रोजगार गारंटी योजनाएं।
 - इससे ग्रामीण उद्योगों और कृषि विकास को बढ़ावा मिलता है।



- **प्रवासी कामगारों के लिए सहायता:** 'वन नेशन वन राशन कार्ड' योजना जैसी पहल।
 - इसके परिणामस्वरूप प्रवासी कामगारों के लिए हेल्पलाइन और संसाधन केंद्र स्थापित किए गए।
- **अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन नीतियां :** विदेशों में भारतीय कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिए देशों के साथ द्विपक्षीय समझौते।
 - वैश्विक बाजारों में रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम।

प्रवासन प्रबंधन में चुनौतियाँ

- **आंकड़ों का अभाव :** प्रभावी नीति निर्माण के लिए प्रवासन पैटर्न पर सटीक आंकड़े आवश्यक हैं।
- **नीतिगत कमियां :** शहरी नियोजन में अनौपचारिक क्षेत्र के प्रवासियों पर सीमित ध्यान।
- **सामाजिक बहिष्कार :** प्रवासियों को अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता है और उन्हें बुनियादी सेवाओं तक पहुंच का अभाव होता है।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएं :** शहरी फैलाव और अनियोजित विकास स्थिरता के लिए खतरा हैं।

आगे बढ़ने का रास्ता

प्रवासन के लाभों को प्राप्त करने और इसकी चुनौतियों को कम करने के लिए, भारत को एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा:

- **डेटा सिस्टम को मजबूत बनाना :** प्रवासन के रुझानों पर नज़र रखने के लिए नियमित सर्वेक्षण और जनगणना आयोजित करना।



- **समावेशी शहरी नियोजन:** प्रवासियों के लिए किफायती आवास, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
- **ग्रामीण अवसरों को बढ़ाना:** संकटग्रस्त पलायन को कम करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका सृजित करना।
- **सामाजिक एकता को बढ़ावा देना:** रूढ़ियों और भेदभाव से लड़ने के लिए जागरूकता अभियान चलाना।
- **जलवायु अनुकूलन:** जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले प्रवासन के लिए अनुकूल नीतियों के माध्यम से तैयारी करना।

निष्कर्ष

प्रवासन एक जटिल घटना है जिसके भारत के विकास पर गहरे प्रभाव पड़ते हैं। यह शहरी भीड़भाड़ और सामाजिक बहिष्कार जैसी चुनौतियाँ तो प्रस्तुत करता ही है, साथ ही आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसर भी प्रदान करता है। सतत शहरीकरण, ग्रामीण विकास और सामाजिक समावेशन के लिए नीतियों को एकीकृत करने वाला संतुलित दृष्टिकोण प्रवासन के बहुआयामी पहलुओं को संबोधित करने और सभी के लिए समान विकास सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।